पर्दा है पर्दा!

श्रीमती गीता चौबे
स्वतंत्र साहित्यकार
बंगलोर, कर्नाटक
मो॰ – 8880965006
ईमेल – choubey.geeta@gmail.com

पर्दा और पर्दानशीं एक दूसरे के पूरक! पर्दा है तो पर्दानशीं, पर्दानशीं न हो तो पर्दे की पूछ कौन करे? पर्दा पुल्लिंग है शायद इसीलिए विपरीत लिंग को ही आकर्षित कर पाता है । पर्दा ही क्यों, बहुत सारे ऐसे विशेषण हैं जो पुल्लिंग हैं और जिनका उपयोग सिर्फ स्त्रीलिंग के लिए ही किया जाता है। अब इसे स्त्रियों को लुभाने का लालीपॉप कहें या उन्हें भरमाने का झुनझुना, एक ही बात है। जेवर, गहना, झुमका, कंगना... यहाँ तक कि नौलखाहार भी पुल्लिंग बनाए गए शब्द विशेषण-रूप में स्त्रियों के लिए ही प्रयोग किए जाते हैं... और स्त्रियाँ...

'मुझे नौलखा मँगा दे रे, ओ सईंया दीवाने...' गा-गाकर सजना को रिझाने में ही अपनी सार्थकता खोजती रह जाती हैं। कभी बरेली वाले झुमके के साथ ठुमका लगातीं तो कभी हाथों के कंगना को खनका पिया को मनाने का नुस्खा अपनाती खुश होती रहती हैं।

बहरहाल, बात चल रही है निगोड़े पर्दे की जो अपनी बिरादरी से तो छत्तीस का आँकड़ा रखता है पर विपरीत लिंगों अर्थात् स्त्रियों की छाती पर मूंग दलने में कोई कसर नहीं छोड़ता। यहाँ तक कि आँख और बुद्धि को भी नहीं छोड़ता जिस पर इस तरह पड़ जाता है कि मुहावरे के रूप में हर जबान पर चढ़ जाता है।

प्राचीन काल से चली आ रही यह पर्दा-प्रथा कितने लुभावने शब्दों के साथ स्त्रियों पर थोपी गयी थी। यह कहा जाता रहा कि जिस तरह कीमती जेवरों को मंजूषा में छुपाकर रखते हैं, उसी तरह हमारी स्त्रियाँ भी इतनी मूल्यवान हैं कि इन्हें पर्दे रूपी मंजूषा में रखना इनके सम्मान को सुरक्षित रखना है। यह पर्दा-प्रथा पुरुषों से ही बचाने के लिए पुरुषों द्वारा बनाया गया एक अलिखित कानून था जिसे स्त्रियों पर थोपा गया। इस अलिखित कानून को हटाने के लिए कितनी लड़ाइयाँ लड़ी गयीं जो सफल भी तभी हुईं जब पुरुषों ने पुरुषार्थ किया। इस बार भी स्त्रियाँ बस यही गाकर संतुष्ट हो गयीं...

'तुम्हीं ने दर्द दिया, तुम्हीं दवा देना...!'

पर्दे के कई रूप भी हैं जो सभी पुल्लिंग ही हैं। आवरण कहें या घूँघट... बुर्का कहें या नकाब सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं जो विपरीत लिंगी को ही अपना निशाना साधते हैं। घूँघट में पुरुष या बुर्के में किसी मर्द को देख दाल में काला नजर आने लगता है। अब भला ऐसी काली दाल कौन खाना चाहेगा? यह दाल तो स्त्रियों को भी न पचे; क्योंकि कभी खिलायी ही नहीं गयी किसी को ऐसी दाल! सरे राह पुरुष अपनी छोटी-बड़ी 'शंकाओं' के समाधान करने में पूरी स्वतंत्रता के साथ बेपर्दा भी हो सकते हैं, परंतु स्त्रियों की शंका का समाधान पर्दे के बिना असंभव है। इसके विपरीत कुछ अपवाद स्वरूप स्त्रीलिंग विशेषण भी हैं जो कभी अपनी बिरादरी से बेवफाई नहीं करते...

'लाज' हो या 'शर्म', 'इज्जत' हो या 'आबरू' स्त्रियों के साथ ही चिपकी रहती हैं। कभी पुल्लिंग की तरफ आकर्षित नहीं होतीं और भूल से भी उनके पास नहीं फटकतीं। पुरुष यदि कच्छे में भी घूम रहा है तो भी मजाल है जो यह 'शर्म' नाम की चिड़िया उनके आसपास भी मँडराए! लाज और हया भी स्त्रियाँ ही हैं, अतः पर्दा भी अकबर के फरमान के साथ इन्हीं के इर्द-गिर्द चक्कर काटता रह जाता है...

"पर्दा है पर्दा!
पर्दे के पीछे, पर्दानशीं है...
पर्दानशीं को बेपर्दा न कर दूँ तो...
तो... अकबर मेरा नाम नहीं है...।